अभी भी
साथ-साथ

जेनेट जोर्ज

बाईबिल की समानता की एक संक्षिप्त व्याख्या

अभी भी
साथ_साथ

बाईबिल की समानता की एक संक्षिप्त व्याख्या

जेनेट जोर्ज

Christians for Biblical Equality

cbeinternational.org

This resource provided in 2016 by **PUBLISH4ALL**

info@publish4all.com

अभी भी साथ-साथ: बाईबिल की समानता की एक संक्षिप्त व्याख्या
Copyright Janet George © 2016

सारे बाईबिल उद्धरण पवित्र बाईबिल, टूडेस इन्टरनेशनल वरशन ® टी एन आई वी से लिये गये है

कापीराईट © 2002, 2004 इन्टरनेशनल बाईबिल सोसाईटी द्वारा। जोनडरवान पब्लिशिंग की अनुमति से सर्वाधिकार सुरक्षित।

अभी भी साथ-साथ: बाईबिल की समानता की एक संक्षिप्त व्याख्या
Copyright Janet George © 2009
क्रिस्टियन्स फोर बिब्लिकल इक्वालिटी द्वारा प्रकाशित
122 डब्ल्यू, फ्रेकलिन ऐव, स्वीट 218
मिनियापोलिस 55404-2451
www.cbeinternational.org

ISBN: 978-1-939971-31-9 (Print)
ISBN: 978-1-939971-32-6 (PDF)
ISBN: 978-1-939971-34-0 (Mobi)
ISBN: 978-1-939971-33-3 (ePub)

Attribution-NoDerivs (http://creativecommons.org/licenses/by-nd/4.0/)
CC BY-ND
You are free to:
Share—copy and redistribute the material in any medium or format for any purpose, even commercially.

Under the following terms:
Attribution—You must give appropriate credit, provide a link to the license, and indicate if changes were made. You may do so in any reasonable manner, but not in any way that suggests the licensor endorses you or your use.

NoDerivatives—if you remix, transform, or build upon the material, you may not distribute the modified material.

Also available in Amharic, Arabic, Chinese Haitian Creole, Finnish, French, German, Hindi, Khmer, Nepali, Protuguese, Russian, Spanish, Swahili, Tamil, Xhosa, and Zulu.

For permission to translate, send inquiry to:
Christians for Biblical Equality, 122 W Franklin Ave, Suite 218, Minneapolis, MN 55404-2451 or cbe@cbeinternational.org

विषय सूची

परिचय 1

आरंभ

सृष्टि 4

मनुष्य का पतन 7

बाईबिल में की समानता

मसीह में एक 9

यीशु और स्त्रियां 16

आत्मिक वरदान 21

बाईबिल में स्त्रियाँ 24

पहली कलीसिया की मुश्किलें

शाँत रहना 25

अधिकार और शिक्षा 28

अधिष्ठाता 33

अधीनता 38

उपसंहार 40

क्रिस्च्यन्स फोर बिब्लिकल ईक्वालिटी (सी बी ई) के बारे में 42

अंतिम नोट्स 44

परिचय

मैं जब कालेज में थी मुझे सप्ताह के अंत में आयोजित एक कार्यशाला में पढ़ाने के लिए कहा गया । मैंने जब अपने पुरुष मित्र से पूछा तो उसने मुझे निरूत्साहित किया क्योंकि बाइबल कहती है स्त्रियां पुरुषों को शिक्षा न दे। इसलिए मैंने उस कार्यशाला में पढ़ाने से इन्कार कर दिया। वचन की जितनी समझ हमें थी हम दोनों उतने ही वचन के आज्ञाकारी होना चाहते थे। मैंने कार्यशाला में भाग लिया और मेरे स्थान पर जिस पुरुष ने उस कार्यशाला में पढ़ाया वह बहुत ही अच्छा व्यक्ति था, पर एक प्रभावशाली शिक्षक नहीं था। मुझे याद है वहां पर बैठकर मैंने यह सोचा, "यकीनन यह सही नहीं है!" आप जानना चाहते हैं कि मुझे सलाह देने वाले पुरूष मित्र का क्या हुआ? मैंने उससे शादी कर ली! यहाँ उसके बाद की कहानी दी गई है:

मेट ओर मैंनें 1978 में अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत इस सोच के साथ करी, कि बाइबल सिखाती है कि परिवार और कलीसिया अथवा मण्डली में एक अनुक्रम होना चाहिए। इसका अर्थ था कि पुरूष नेतृत्व करने वाले और निर्णय लेने वाले होंगे। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमने सोचा कि परमेश्वर पुरुषों को स्त्रियों से अधिक मूल्य देते हैं, पर यह कि उनकी अपनी विशेष भूमिका होती है। साल दर साल बीतने पर हमारे अनुभव और बाईबिल की शिक्षा की हमारी सोच में टकराव होने लगा।

उसके पश्चात हमने इस विषय पर पाँडित्य का ऐसा खजाना खोज निकाला, जो एक अलग नजरिया पेश करता है। समतावादी (या समानतावादी) यह विश्वास करते है कि बाइबल सारे विश्वासियों की मौलिक समानता सिखाती है जिसका विश्वासी अपने परमेश्वर-प्रदत्त वरदानों के अनुसार, कलीसिया-मण्डली, घर अथवा समाज में इसके उपयोग के लिए स्वतंत्र है। इसका अर्थ है कि सेवकाई का हर ओहदा या पद्वी वरदानों और क्षमताओं पर आधारित होनी चाहिए,

लिंग पर नहीं। और परिवार एक दूसरे के प्रति समर्पण और एक-दूसरे के अधीन रहने का, प्रोत्साहन और नेतृत्व का स्थान होना चाहिए।

हमें ऐसे बहुत सारी स्थितियों का अनुभव है जहां स्त्री और पुरूष सत्तात्मक अर्थात पुरुष के सिरमौर होने के नजरिये में सीमित है। मैं एक मसीही पुस्तकों की दुकान पर गई और महिलाओं के खण्ड में देखा तो पाया कि वहां चोकलेट, व्यायाम और सजावट के विषय की किताबें थी। पुरुषों के खण्ड में नेतृत्व,वित्त और सामयिक विषयों की पुस्तकें थी। यह हमारे पुत्रों और पुत्रियों को क्या संदेश दे रहा है? मेट और मैं एक विवाह समारोह में गये जहां पर यह कहा गया कि अधीन होने का अर्थ है पत्नी अपने पति के कही हुई हर बात को माने, चाहे वह गलत ही क्यों न हो। हम एक ऐसे मिशनरी पति-पत्नी को जानते है, जिनकी आर्थिक सहायता इसलिए हटा दी गई कि वह दोनों शिक्षक हैं।

क्या आप जानते हैं...

- पौलुस ने बाईबिल में "परिवार का सिर" पद का उपयोग नहीं किया।
- वचन कहता है कि हमें एक-दूसरे के अधीन रहना है, केवल पत्नी को ही पति के अधीन रहना नहीं है।
- "सहायक" शब्द, जो उत्पत्ति में स्त्री की व्याख्या करने के लिए उपयुक्त हुआ है वह परमेश्वर का वर्णन करने के लिए भी उपयोग किया गया है।

हमें सच को खोजना है कि हम सब स्वतंत्र रूप से प्रभु यीशु के संग-संग उसकी सेवकाई कर सकें!

सृष्टि

प्र बाइबल कहती है कि स्त्रियों को पतियों का सहायक बनने के लिए सृजा गया है। इसलिए क्या पुरुषों को साहसिक नेता नहीं बनाया गया है?

उ पुरुषों और स्त्रियों को साझेदारों के रूप में सृजा गया है, जो परमेश्वर के राज्य के लिये एक समान रुप से जिम्मेदार हो।

परमेश्वर ने कहा, "*हम अपने स्वरूप में मनुष्य की रचना करें*-अपने सदृश्य *कि वे* सागर की मछलियों, आकाश के पक्षियों पालतू पशुओं, भूमि पर रेंगेते प्रत्येक जीवन तथा सम्पूर्ण पृथ्वी पर *प्रभुत्व करे।* स्वयं अपने स्वरूप में परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की---परमेश्वर ने अपने स्वरूप में उसकी सृष्टि की. परमेश्वर ने उन्हें पुरुष एवं स्त्री सृजा । परमेश्वर ने उन्हें यह आशीर्वाद दियाः "*समृद्ध होकर सम्वर्धन करते जाओ*, पृथ्वी को आपूर्त कर दो. इस पर अधिकार कर लो. सागर में निहित मछलियों,आकाश के पक्षियों तथा पृथ्वी पर विचरते प्रत्येक प्राणी पर तुम्हारा प्रभुत्व हो." (उत्पत्ति 1:26-28 विशेष जोर जोड़ा गया है)

यहां पर साफ तौर पर दो आधिकारिक ढांचा हैः सारी सृष्टि पर परमेश्वर का अधिकार, और पुरुष और स्त्री का एक साथ पृथ्वी और सब प्राणियों पर अधिकार। आदि से ऐसा कोई उद्धेशय नहीं था कि पुरुष स्त्रियों पर अधिकार करें। उन्हें साथ- साथ मिलकर संतानों को पैदा करके उनकी परवरिश करनी है और पृथ्वी पर अधिकार करना है- और यह एक साहसिक यात्रा है!

> परमेश्वर ने कहा, "यह सुसंग नहीं कि मानव अकेला रहे; मैं उसके लिए एक *उपयुक्त सहायक* की रचना करूंगा (उत्पत्ति 2:18, विशेष बल के साथ)

पद "सहायक" अथवा "एजेर" की यह गलत व्याख्या बड़े पैमाने पर की गई है कि स्त्रियों की रचना पुरुषों की सेवा करने और उनके अधीन रहने के लिये की गई है। लिन्डा बेलिवल कहती हैः "पुराने नियम में दिये "एजेर" शब्द का बाकी 19 स्थानों में एक ऐसी सहायता के लिये किया गया है, जो एक बलवान व्यक्ति किसी जरूरतमंद की करता है,

जैसे परमेश्वर की सहायता, एक राजा, एक मित्र-राष्ट्र या एक सेना। उन्नीस में से 15 संदर्भ पदों में उस सहायता की ओर इंगित किया है, जो सिर्फ परमेश्वर दे सकते हैं" (1) उदाहरण के लिये:

> "मैं अपनी आंखें पर्वत की ओर उठाऊंगा - मेरी सहायता कहा से आयेगी? मेरी सहायता प्रभु की ओर से, जो स्वर्ग और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता है (भजन 121:1-2)।

पद "उपयुक्त" और "नेगदो" का अर्थ है मुखोन्मुख, जो समान हो या उस प्रकार हो। एक "उसके लिये एक उपयुक्त सहायक" का अर्थ है एक साथी जो उसके जैसा हो, हर प्रकार से! स्त्री की रचना इस प्रकार से की गई थी कि वह आदम के साथ मिलकर अपनी क्षमताओं के साथ परमेश्वर प्रदत्त कार्य को पूरा करें। परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को साथ-साथ कार्य करने के उद्धेश्य से समान साझेदार बनाया है।

ऐसा कहा गया है कि “ताकत भ्रष्ट कर देती है; निरंकुश ताकत निरंकुश रूप से भ्रष्ट करती है। एक व्यक्ति (पुरूष) को एक ऐसी नेतृत्व पद्वी देना, जिसका कोई लेखा न हो और जो अनअर्जित हो, खतरनाक है। परमेश्वर को यह ज्ञात था इसलिए साझेदारी- न की अनुक्रम प्रभु की रचना है। परमेश्वर ने विवाह में पति-पत्नि के बीच परस्पर जवाबदेही का उद्देश्य रखा है। इससे हटकर ताकत और अधिकार का एक तंत्र लागू करना मौखिक और शारीरिक उत्पीड़न की त्रासदी का कारण हो सकती है। हमें मौलिक संरचना से जुड़े रहना है।

मनुष्य का पतन

प्र ऐसा लगता है कि बहुत सी संस्कृतियों में पुरुष प्रधान होते हैं। क्या यह इसलिए है कि परमेश्वर ने पुरुषों को ऐसा ही सृजा है?

उ पुरुष आधिपत्य पतन का एक परिणाम है, जिसके ऊपर जयवन्त होना है, उसे अपनाना नहीं।

परमेश्वर ने स्त्री से कहा, "मैं तुम्हारी गर्भावस्था की *वेदना* को अधिक बढ़ाऊँगा; तुम पीड़ा की स्थिति में बालकों को जन्म दोगी; यह होने पर भी तुम्हारी मनोकामना तुम्हारे पति की ओर प्रवण होगी और *तुम पर उसका प्रभुत्व होगा।* उसने आदम से कहा, "क्योंकि तुमने अपनी पत्नी की सुनी और उस वृक्ष से खाया जिसके विषय मैंने आदेश दिया था, 'तुम इसका सेवन नहीं करोगे,' "तुम्हारे कारण भूमि शापित हो गई; तुम आजीवन इस पर श्रम कर इसकी उपज का उपभोग किया करोगे यह तुम्हारे लिये कांटे और ऊँटकटारे उत्पन्न करेगी; भूमि की वनस्पति तुम्हारा आहार होगी; तुम अपने पसीने के द्वारा अपना आहार प्राप्त करोगे-उस समय तक, जब तक तुम धूलि में लौट न जाओ। क्योंकि इसी में से तुम्हारी व्युत्पत्ति हुई है; तुम धूलि ही हो और तुम्हें धूलि ही में लौट जाना है" (उत्पत्ति 3:16-19 विशेष बल जोड़ा गया है)

पुरुष और स्त्री दोनों ही पाप में गिरने में भागीदार हुए, पाप का चुनना उनके जीवन में यह परिणाम लेकर आयाः- एक विरोधी प्रकृति, जच्चा के समय वेदना और पुरुष प्रधानता। यह हमारे रहने के निर्देश नहीं है परन्तु पाप का इस संसार में प्रवेश करने के दुष्प्रभाव है। एक पति का अपनी पत्नी पर स्वामित्व करना एक खलिहान में मिल कांटों की तरह है जिन्हें गले नहीं लगाया जाता परन्तु जिसके ऊपर विजय पानी है। बेलिविल यह व्याख्या करती है कि "परमेश्वर का उद्धेश्य साझेदारी था पृथ्वी पर सह-आधिपत्य, बच्चों की परवरिश कर बड़ा करने की सह-जिम्मेदारी और भूमि को जोतने का सहकार्य करना। एक के ऊपर दूसरे का आधिपत्य उद्धेश्य नहीं था। यह एक संबंधों की दुष्क्रिया है, जो परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता के फलस्वरूप हुई" (2) हमे *अभी* भी साथ-साथ सेवकाई करनी है।

मसीह में एक

प्र परमेश्वर सभी के लिये प्रेम और महत्व रखते है, पर क्या स्त्रियों और पुरुषों की भूमिका अलग नहीं होती?

उ भूमिका परमेश्वर प्रदत्त वरदान, क्षमता और अनुभव के आधार पर होनी चाहिये लिंग के आधार पर नहीं।

> इसलिए अब न कोई यहूदी है, न कोई यूनानी न कोई स्वतन्त्र है न कोई दास और न कोई पुरुष है, न कोई स्त्री क्योंकि तुम सब मसीह येशु में एक हो। (गलातियों 3: 28)

कई लोग कहते हैं कि आयत के अनुसार पुरुष और स्त्री एक समान प्रिय है, अमूल्य है और उनका उद्धार (समानता में) हुआ है लेकिन कार्यात्मक रुप से वह अलग-अलग है (भूमिका में असमानता है)

भूमिका में अधीनता के उदाहरण होते है, जैसे शिक्षक/छात्र और मालिक/कर्मचारी। पर यह कार्य क्षमताओं पर आधारित होते हैं और अस्थायी होते है। कक्षा में शिक्षक की क्षमता के कारण एक छात्र उनके अधीन होता है लेकिन यह अस्थायी है। यदि यह शिक्षक एक रेस्टोरेन्ट में काम कर रहा होता

जिसका मालिक वही छात्र है तब उनकी भूमिका बदल जाती। भूमिका परिस्थितियों और योग्यताओं के आधार पर निरन्तर बदलती रहती है।

रिबेका मेरिल्ल ग्रोथियस ने इस बात की व्याख्या है कि स्त्री की अधीनता क्षमताओं के आधार पर नहीं अपितु स्त्री होने के कारण होती है। और यह अस्थाई नहीं है-वह कभी भी इसके बाहर नहीं आ पाती इसका अर्थ यह है कि यह भूमिका की असमानता से अस्तित्व की असमानता बन जाती है। यह एक असंगत बात है कि हम एक ही समय में स्त्री को पुरुष के अधीन बतायें और उसी समय यह भी कहें कि उसका समान मूल्य है (3)

यह ध्यान दीजिये कि यह वचन सिर्फ स्त्री और पुरुष के विषय में बात नहीं कर रहा। कल्पना कीजिए कि कोई कहे भूमिका कुल या वर्ग के आधार पर होनी चाहिये!

पौलुस प्रेरित यह नहीं कह रहे कि हम सब समरूप है और "एक ही लिंग" के है। यह वचन यह घोषणा करता है कि यीशु मसीह के कार्य में कुल, वर्ग और लिंग सब अप्रासंगिक है और सब समान है। नये नियम के बहुत से वचन यह निश्चित करते हैं कि सारे विश्वासी अपने अस्तित्व और भूमिका में समान हैः यूहन्ना 17: 20-23; रोमियों 12:4-5; 1 कुरिन्थियों 12: 12-14; इफिसियों 4: 4-8, 11-13।

कलीसिया को इस टूटे संसार में एकता का नमूना बनना है। कोई भी शब्द, नज़रिया या नीति जो स्त्रियों को किसी भी प्रकार से "कम" आंकती है, वह हमारे संयुक्त/विस्तृत प्रेम के उदाहरण में रोड़ा बनता है।

प्र कोई एक अधिकारी होना चाहिए ताकि निर्णय लिया जा सके। क्या यह स्वाभाविक नहीं है कि यह एक पुरुष हो?

उ जबाबदारी होने के साथ ही ज्ञान और अनुभव का लाभ उठाने के लिए निर्णय लेने में भी साझेदारी होनी चाहिये

फिर भी प्रभु में न तो नारी पुरुष से और न पुरुष नारी से स्वतन्त्र है। जिस प्रकार नारी की उत्पत्ति नर से हुई है उसी प्रकार अब नर का जन्म नारी से होता है तथा सभी सृष्टि की उत्पत्ति परमेश्वर से है। (1 कुरिन्थियों 11:11-12)

आज के समाज में स्त्री और पुरुष दोनों ही एक समान विचारपूर्ण निर्णय लेने में कुशल होते हैं एक बुद्धिमान स्त्री को उसकी तर्क क्षमता के उपयोग से वंचित करना उसका और उसके चारों ओर के लोगों को अपमानित करना है। परमेश्वर की इच्छा आदि ही से परस्पर समान अधिकार और निर्णयों को एक-दूसरे के साथ मिलकर लेने की है हमें साथ-साथ रहकर सेवकाई करनी है।

एक समय आयेगा जब चर्चा का रास्ता बंद हो जाता है। गिलबर्ट बिलजिकियान ने यहां कुछ सुझाव दिये हैं, जिससे दों तरफें निर्णयों के ऊपर एक स्थायीकरण या हल निकाला जा सकता है (यह क्रम में नहीं है):

1. परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त करना
2. एक दूसरे के अधीन रहने की कोशिश करना, एक दूसरे को सुनना, सम्मान करना और एक-दूसरे से सहानुभूति दिखाना

3. अपने आत्मिक वरदानों का स्वाभाविक कौशल और एक क्षेत्र विशेष की दक्षता का निरंतर अभ्यास करें।
4. समझौता
5. दूसरे विश्वस्त और अनुभवी लोगों से सलाह लेना
6. बाईबिल सिद्धांतों को परिभाषित करना
7. भले-बुरे पक्षों की पहचान करना
8. इस बात का ख्याल रखें कि जिस व्यक्ति का अधिक दांव पर लगा है उस व्यक्ति को निर्णय लेने में बोलने का हक दे (4)

प्र पुराने नियम में सिर्फ पुरुष ही पुरोहित हुआ करते थे तो क्या पति घर के पुरोहित अथवा आत्मिक नेता नहीं हुए?

उ हर किसी की परमेश्वर तक एक समान पहुंच और एक ही समान जिम्मेदारी है।

तुम एक चुना हुआ वंश, *राजकीय पुरोहित*, पवित्र राष्ट्र तथा परमेश्वर की अपनी प्रजा हो कि तुम उनकी सर्वश्रेष्ठता की घोषणा कर सको, जिन्होंने अंधकार से तुम्हारा बुलावा अपनी अद्भुत ज्योति में किया है। (1 पतरस 2: 9)

वचन में ऐसा संकेत कही पर नहीं है कि पति परिवार का पुरोहित होता है यह बात सुस्पष्ट है कि मसीह यीशु के द्वारा सभी को परमेश्वर तक समान पहुंच है। जैसे जोन फेलान कहते हैं "मंदिर का पर्दा दो भागों में बँट गया है और सब

लोगों की परमेश्वर तक पहुंच है। सभी लोग परमेश्वर के पुरोहित है। परमेश्वर के सभी जन पवित्र है। परमेश्वर की सारी प्रजा पर उसकी आत्मा है" (5)

प्र क्योंकि परमेश्वर हमारे पिता और यीशु एक पुरुष थे, तो क्या पुरुषों को आत्मिक नेता नहीं होना चाहिए?

उ परमेश्वर पुरुष नहीं है परमेश्वर आत्मा है, जिनको स्त्री और पुरुष दोनों ही प्रतिबिंबित करते हैं।

"पिता" शब्द अनेक रुपक अलंकारों में से जिन्हें परमेश्वर के लिये उपयोग किया गया उनमें से एक है, जिसे उन दिनों में उस व्यक्ति की व्याख्या करने के लिए उपयोग किया जाता था, जो उत्तराधिकार और सुरक्षा को प्रकट करता था। परमेश्वर पुरूष नहीं है। परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24)। स्त्री और पुरुष दोनों ही परमेश्वर के स्वरूप में बनाये गये है और परमेश्वर को समान रूप से प्रतिबिंबित करते है। मिमि हदाद यह बताती है, "यदि हम यह हठ करें कि परमेश्वर पुरुष है तो वह मूर्तिपूजा होगी और वह परमेश्वर को अपने स्वरूप में बनाने की हमारी कोशिश करना है, जो वचन के विपरीत है" (6)

यीशु एक पुरुष होकर इसलिये आये क्योंकि उन्हें यहूदियों के सिनागोग में प्रचार करना था, जहां पर उस समय स्त्रियों का प्रवेश वर्जित था। मसीह हमारा उद्धारकर्ता बने, परमेश्वर ने मनुष्य का शरीर धारण किया- पुरुष का नहीं।

प्र उन लोगों के प्रति जो यह कहते हैं कि हम परम्परागत नियमों का पालन न करके परिवार को हिस्सों में बांट रहे हैं आपकी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?

उ एक घर जहां वचन की समानता का अभ्यास किया जाता हो, वह परिवार को मजबूत ही बनायेगा।

अकेले व्यक्ति पर तो प्रबल होना सम्भव है किन्तु *दों* तन्तुओं से बनी रस्सी को सरलतापूर्वक नहीं तोड़ा जा सकता है। (सभोपदेशक 4:12)

यदि एक तन्तु को आप कमजोर करते है वह रस्सी को प्रबल नहीं करती। सच्चे रूप से स्वस्थ संबंध परस्पर सम्मान का होता है। यदि यह मान लिया जाये कि परिवार के लिए सबसे उत्तम क्या हो, इसके अनुसार माता-पिता अपनी जिम्मेदारियाँ और निर्णय बाँट ले तब यह बच्चों के लिए फायदों को दुगुणा करती है। माता-पिता को अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा जानने के लिये प्रोत्साहित करने का अर्थ यह नहीं है कि बच्चों को किसी भी प्रकार से कम आंका गया है या फिर परिवार में उनकी प्राथमिकता कम हो गई है। माता और पिता दोनों ही के लिये यह एक बहुत अच्छा उदाहरण होगा कि वह स्वेच्छा से एक-दूसरे के पेशे में उनकी सहायता करे, चाहे वह घर पर पूर्ण-कालिक कार्य हो, चाहे घर के बाहर का कार्य हो या दोनों ही का मिश्रण क्यों न हो।

तीसरा तंतु प्रभु यीशु मसीह है, जो घर का प्रभु है। जहां मसीह का सम्मान किया जाता है और सबका आदर किया जाता है वहां प्रेम की विपुलता होती है।

ध्यान रखिए कि ऐसे कई वाकिये होते हैं जब एक घर में माता और पिता नहीं होते ऐसी परिस्थिति में पारंपरिक भूमिका के नियम लागू करना एकलौते अभिभावक की सहायता नहीं करता। इन परिवारों को मसीह के पूरे शरीर अथवा कलीसिया की सहायता द्वारा सुदृढ़ किया जाता है।

यीशु और स्त्रियां

प्र यीशु ने स्त्री शिष्या का चयन क्यों नहीं किया?

उ यहूदी पुरुषों को चुना गया क्योंकि वह उस समय की मिशन सेवकाई को निष्पादित कर सके।आज हर किसी को महान आज्ञा पूरा करने के लिये बुलाया गया है।

मसीह यीशु ने बारह को चुना कि वे उनके साथ रहे, वह उन्हें प्रचार के लिए निकाल सके-और उन्हें दुष्टात्मा निकालने का अधिकार हो (मरकुस 3*:* 14-15)

रिचर्ड और केथरिन क्रोजर यह बताते है कि "यीशु के पास स्त्रियों का एक समूह रहता था, जो उसकी सेवा करती थी और उसके प्रचार की सेवकाई में उसके साथ चलती थी। पर उनको अकेले सार्वजनिक प्रचार और चंगाई की सेवकाई के लिए भेजना असंभव था। तल्मूड वचन पंडितों को सार्वजनिक रूप से किसी स्त्री से बात नहीं करने के लिए कहा गया था, चाहे वह उनकी पत्नी ही क्यों न हो। न ही परमेश्वर के विषय स्त्रियों से बातचीत करने की आज़ादी थी क्योंकि यह पाप करने का प्रलोभन समझा जाता था...यीशु जानते थे कि ऐसे नज़रिये को बदलने से पूर्व मनफिराव होना जरूरी था" (7)

यह बात विचारणीय है कि यीशु के 12 शिष्यों में कोई भी अयहूदी नहीं थे। तो यदि शिष्य कलीसिया के नेतृत्व का नमूना है तब सारे अयहूदी पुरुषों को भी यह कार्य नहीं करना चाहिए।

प्र क्या यीशु की सेवकाई में स्त्रियां भी सम्मिलित थी?

उ यीशु का स्त्रियों के प्रति सम्मान और सेवकाई में उनको सम्मिलित करना लोगों द्वारा उनकी उग्रता के तौर पर देखा जाता था।

एक स्त्री शिष्या

> इसके बाद शीघ्र ही मसीह यीशु परमेश्वर के राज्य की घोषणा तथा प्रचार करते हुए नगर-नगर और गांव-गाव फिरने लगे। बारह शिष्य उनके साथ-साथ थें। इनके अतिरिक्त *कुछ वे स्त्रियां भी* उनके साथ यात्रा कर रही थीं; जिन्हें रोगों और दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया गया थाः मगदालावासी मरियम, जिस में से सात दुष्टात्मायें निकाली गई थी; हेरोदेस के भण्डारी कूजा की पत्नी योहन्ना; सूसन्ना तथा अन्य स्त्रियां। ये वे स्त्रियां थी, जो अपनी सम्पत्ति से इनकी सहायता कर रही थीं (लूका 8: 1-3 बल जोड़ा गया है)

स्त्रियों को सार्वजनिक सम्मेलनों में गिना तक नहीं जाता था पर यीशु ने उनकी सहायता और आर्थिक मदद का स्वागत किया।

यीशु स्त्रियों को पढ़ाते हैं

> मसीह येशु और उनके शिष्य यात्रा करते हुए एक गाँव में पहुँचे, जहाँ मार्था नामक एक स्त्री ने उन्हें अपने घर में आमन्त्रित किया. उसकी एक बहन थी, जिसका नाम मरियम था. वह प्रभु के चरणों में बैठकर उनके प्रवचन सुनने लगी किन्तु मार्था विभिन्न तैयारियों में उलझी रही. वह मसीह येशु के पास आई और उनसे प्रश्न किया, "प्रभु, क्या आपको इसका लेशमात्र भी ध्यान नहीं कि मेरी बहन ने अतिथि-सत्कार का सारा बोझ मुझ अकेली पर ही छोड़ दिया है? आप उससे कहें कि वह मेरी सहायता करे." "मार्था, मार्था," प्रभु ने कहा, "तुम अनेक विषयों की चिन्ता करती और घबरा जाती हो किन्तु ज़रूरत तो कुछ ही की है—वास्तव में एक ही की. मरियम ने उसी उत्तम भाग को चुना है, जो उससे कभी अलग न किया जाएगा." (लूका 10:38-42)

यीशु के समयकाल में अधिकांश शिक्षा-दीक्षा स्त्रियों के लिये वर्जित थी। यद्यपि जब मरियम ने प्रभु यीशु के पैरों तले एक शिष्य का स्थान लिया यीशु ने उसके वचन सीखने के अधिकार की रक्षा की। यह ध्यान दीजिए की यीशु ने उसके चुनाव के विषय क्या कहा, "जो उससे कभी अलग न किया जाएगा," हालांकि बहुतों ने कोशिश करी है।

एक स्त्री सुसमाचार प्रचारक

> तभी उनके शिष्य आ गए और उन्हें एक स्त्री से बातें करते देख दंग रह गए, फिर भी किसी ने उनसे यह पूछने का साहस नहीं किया कि वह एक स्त्री से बातें क्यों कर रहे थे या उससे क्या जानना चाहते थे अपना

> घड़ा वहीं छोड़ वह स्त्री नगर में जाकर लोगों को बताने लगी, “आओ, एक व्यक्ति को देखो, जिन्होंने मेरे जीवन की सारी बातें सुना दी हैं. कहीं यही तो मसीह नहीं!” तब नगरवासी मसीह येशु को देखने वहाँ आने लगे. अनेक नगरवासियों ने उस स्त्री की इस गवाही के कारण मसीह येशु में विश्वास किया: “आओ, एक व्यक्ति को देखो, जिन्होंने मेरे जीवन की सारी बातें सुना दी हैं.”(यूहन्ना 4:27-30, 39)

स्त्रियों से सार्वजनिक स्थल पर बचकर रहा जाता क्योंकि उन्हें पाप का प्रलोभन समझा जाता था, पर यीशु ने अपने शिष्यों को तब अचंम्भित किया जब उन्होंने कुएं के किनारे खड़े होकर समाज में निम्न दर्जा रखने वाली स्त्री से बातें करी। यीशु मसीह की बाईबिल में लिखित यह सबसे लम्बी व्यक्तिगत बातचीत थी। मसीह यीशु ने उसे अपने शहर का सुसमाचार प्रचारक होने के लिए प्रोत्साहित किया। उसकी गवाही से बहुत लोगों ने यीशु में विश्वास किया।

यीशु ने प्राथमिकतायें स्थापित की

> जब मसीह येशु यह शिक्षा दे रहे थे, भीड़ में से एक नारी पुकार उठी, “ धन्य है वह माता, जिसने आपको जन्म दिया और आपका पालन-पोषण किया.” किन्तु मसीह येशु ने कहा, “परन्तु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर के वचन को सुन कर उसका पालन करते हैं.” (लूका 11:27-28)।

स्त्रियों की कद्र मुख्य रूप से बच्चों को जन्म देने के कारण से होती थी पर यीशु ने कहा एक शिष्य होना अधिक महत्व रखता है

स्त्रियाँ शिष्यों को पुनरूत्थान के विषय सिखाती है

> वे वहाँ से भय और अत्यन्त आनन्द के साथ जल्दी से शिष्यों को इसकी सूचना देने दौड़ गयी मार्ग में ही सहसा येशु उनसे मिले और उनका अभिनन्दन किया. उन्होंने उनके चरणों पर गिर कर उनकी वन्दना की. येशु ने उनसे कहा, “डरो मत! मेरे भाइयों तक यह समाचार पहुँचा दो कि वे गलील प्रदेश को प्रस्थान करें, मुझसे उनकी भेंट वहीं होगी.” (मत्ती 28: 8-10)

अदालत में एक स्त्री की गवाही स्वीकार्य नहीं थी पर यीशु ने दो स्त्रियों को चुना कि उसकी गवाही दे और उसके पुनरूत्थान की घोषणा करें।

यीशु मसीह ने कभी भी स्त्रियों की अधीनता नहीं सिखाई। वह मनुष्य के पतन के दुष्प्रभावों को हटाने आये और स्त्रियों के प्रति उनके नज़रिये ने इसको प्रतिबिंबित किया। यीशु ने स्त्रियों को पाप और पूर्वाग्रह से छुड़ाया और उनको मुक्त किया!

आत्मिक वरदान

प्र परमेश्वर विश्वासियों को आत्मिक वरदान देते हैं, पर क्या यह पुरुष और स्त्री के लिए अलग नहीं है?

उ परमेश्वर आवश्यकता के अनुसार आत्मिक वरदान देते हैं; वरदान लिंग के आधार पर नहीं बाँटे जाते।

वस्तुत: यह योएल भविष्यद्वक्ता द्वारा की गई इस भविष्यवाणी की पूर्ति है: "यह परमेश्वर की आवाज़ है: अन्तिम दिनों में मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा. तुम्हारे *पुत्र और पुत्रियाँ भविष्यवाणी करेंगे.* तुम्हारे नवयुवक दिव्य दर्शन तथा वृद्ध स्वप्न देखेंगे. मैं उन दिनों में अपने दास और दासियों पर स्त्री और पुरुष दोनों पर अपना आत्मा उण्डेल दूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे" (प्रेरितों के काम 2:16-18)

हरेक को पवित्रआत्मा का प्रकाशन सबके लाभ के उद्धेश्य से दिया जाता है. इन सबको सिर्फ एक और एक ही आत्मा के द्वारा किया जाता है तथा वह हर एक में ये क्षमताएँ व्यक्तिगत रूप से बाँट देते हैं. (1 कुरिन्थियों12-7,11)

इसलिए कि हमें दिए गए अनुग्रह के अनुसार हममें पवित्रआत्मा द्वारा दी गई भिन्न-भिन्न क्षमताएँ हैं. जिसे भविष्यवाणी की क्षमता प्राप्त है, वह उसका उपयोग अपने विश्वास के अनुसार करे; यदि सेवकाई की, तो सेवकाई में; सिखाने की, तो सिखाने में; उपदेशक की, तो उपदेश देने में; सहायता की, तो बिना दिखावे के उदारतापूर्वक देने में; जिसे अगुवाई की, वह मेहनत के साथ अगुवाई करे तथा जिसे करुणा भाव की, वह इसका प्रयोग सहर्ष करे. (रोमियों 12: 6-8)

हर एक ने परमेश्वर द्वारा विशेष क्षमता प्राप्त की है इसलिए वह परमेश्वर के असीम अनुग्रह के उत्तम भण्ड़ारी के रूप में एक दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उसका प्रयोग करे (1 पतरस 4: 10 बल जोड़ा गया है)

नये नियम में जब भी परमेश्वर प्रदत्त वरदानों के विषय बताया गया है, लिंग भेद का कोई संकेत नहीं है, यहां तक कि उन वरदानों में तक भी जिनमें अधिकार रखने वाले वरदान माना जाता है। जब आधी जनसंख्या को अपने परमेश्वर वरदान के अनुसार सेवकाई करने से सीमाबद्ध किया जाता है तब सुसमाचार का कार्य गंभीर रुप से बाधित होता है।

यीशु ने मत्ति 9: 37-38 में कहा यह निर्देश दिये... “उपज तो बहुत है किन्तु मजदूर कम है इसलिए उपज के स्वामी से विनती करो कि इस उपज के लिये मजदूर भेज दें” परमेश्वर का कार्य करने से कोई किसी को क्यों निरुत्साहित करें?

थाईलैंड में मिली 2004 के लोसेन समिति जो संसार भर में सुसमाचार का समूह है, उसमें 130 देशों के 1530 लोगों ने यह चर्चा करने के लिए भाग लिया कि “कलीसिया को पूरे संसार के सुसमाचार कार्य के लिए कैसे क्रियाशील किया

जाये"। एक कथन इस प्रकार का था "हम सारे विश्वासियों के पौरोहित्य की पुष्टि करते है और कलीसिया का आव्हान करते हैं कि वह स्त्री-पुरुष और जवानों को अपनी गवाही देने की बुलाहट को पूरी करने और संसार भर में फैले सुसमचार के कार्य में सहकर्मी होने के लिए समर्थ, सशक्त और प्रोत्साहित करें "(8)

गिलबर्ट बिलजिकियान यह बात सटीक रूप से कुछ ऐसे कहते है "हमारे प्रभु ने उन दासों की बदकिस्मति का वर्णन किया है जो अपनी प्रतिभा को परमेश्वर के राज्य में पूर्ण उपयोग करने के स्थान पर उनको गाड़ देते हैं (मत्ति 25:30), जब हम उन चर्च (कलीसिया के अगुवों के विषय सोचते है, जो अपनी जिम्मेदारी के अधीन रह रहे विश्वासियों को परमेश्वर के राज्य के लिये हर उपलब्ध संसाधन का उपयोग करने की बजाय उन्हें गाड़ने के लिये करते है, उनको मिलने वाले भयानक दण्ड के विषय में हम सोचकर काँप ही सकते है" (9)

बाईबिल में स्त्रियाँ

प्र परमेश्वर विश्वासियों को आत्मिक वरदान देते हैं, पर क्या यह पुरुष और स्त्री के लिए अलग नहीं है?

उ परमेश्वर आवश्यकता के अनुसार आत्मिक वरदान देते हैं; वरदान लिंग के आधार पर नहीं बाँटे जाते।

वचन में नेतृत्व की पद्धवी प्राप्त अनेक स्त्रियों का वर्णन किया गया है। उस समय की संस्कृति के कारण उनका वर्णन पुरुषों की अपेक्षा कम ही किया गया है। पर यदि स्त्रियों का नेतृत्व करना या शिक्षा देना गलत माना जाता तो उन्हें कभी भी वचन में स्त्रियों की नियुक्ती अथवा उनको बढावा नहीं दिया जाता।

- अन्ना (लूका 2:36-38) और फ़िलिप की चार पुत्रियाँ भविष्यवक्तिन थी (प्रेरितों के काम 21:8-9)।
- प्रिसिल्ला अक्विल्ला के साथ परमेश्वर की राहों के विषय अपोल्लोस को शिक्षा देती थी, अपने घर में कलीसिया की स्थापना करती है (1 कुरिन्थियों 16:19) और उसे पौलुस द्वारा एक सह-कर्मी सम्बोधित किया गया है (रोमियों 16:3)।
- फिबी एक उपयाजक अथवा पादरी थी और पौलुस की उपकारी थी (रोम 16: 1-2)।
- लिडिया विश्वासियों से अपने घर पर मिलती है और पौलुस और सिलास का स्वागत भी करती है (प्रेरितों के काम 16: 13-15, 40) ।
- जूनिया एक प्रेरित थी (रोमियों 16:7) ।
- यूओ दिया और सुनताके पौलुस के सहकर्मी थे (फिलिप्पियों 4:2-3)

शाँत रहना

प्र क्या बाईबिल यह नहीं कहती कि स्त्रियों को कलीसिया में मौन रहना चाहिये?

उ कुरिन्थियों की पत्री में जिस वचन में शाँत रहने के लिये कहा गया है वह उस समयकाल की आदर्श रीति के संबंध में था। इसका स्त्रियों की क्षमता या उपयुक्ततता से कोई संबंध नहीं है।

प्रियजन, तुम जो कुछ करो वह कलीसिया की उन्नति के लिए हो. जहाँ तक अन्य भाषा में बातें करने का प्रश्न है, अधिक से अधिक दो या तीन व्यक्ति ही क्रमानुसार यह करें तथा कोई व्यक्ति उसका अनुवाद भी करे. यदि वहाँ कोई अनुवाद करने वाला न हो तो वे चुप रहें और उनकी बातें उनके तथा परमेश्वर के बीच सीमित रहे. भविष्यवाणी मात्र दो या तीन व्यक्ति ही करें और बाकी उनके वचन को परखें.यदि उसी समय किसी पर ईश्वरीय प्रकाशन हो, तो वह, जो इस समय भविष्यवाणी कर रहा है, शान्त हो। परमेश्वर गड़बड़ी के नहीं, शान्ति के परमेश्वर हैं. पवित्र लोगों की सभी आराधना-सभाओं के लिए सही यही है कि सभाओं में स्त्रियाँ चुप रहें—उनको वहां बात करने की अनुमति नहीं है. व्यवस्था के अनुसार सही है कि वे अधीन बनी रहें. यदि वास्तव में उनकी जिज्ञासा का कोई विषय हो तो वे घर पर अपने पति से पूछ लिया करें; क्योंकि

आराधना सभा में स्त्री का बोलना ठीक नहीं है.(1 कुरिन्थियो 14: 26ब-30, 33-35)

इक्कीसवी सदी में एक स्त्री के लिए कलीसिया में बोलना अपमानकारक नहीं है। तथ्य यह है कि, कई लोग अपने विश्वास में इस कारण बाधित हो जाते हैं क्योंकि उन्हें मसीहत अथवा ईसाईयत एक पुरुष-प्रधान धर्म दिख पड़ता हैं।

कोरिन्थ की कलीसिया को लिखे इस पत्र का सिद्धांत यह है कि आराधना सभा में एक क्रम और प्रबंध होना चाहिए। ध्यान दीजिए कि सिर्फ स्त्रियों को ही शांत होने के लिए नहीं कहा गया है। वह भी जो अन्यभाषा में बोलना चाहता हो, वह परिभाषक की अनुपस्थिति में शांत रहे। और यदि एक भविष्यवक्ता बात कर रहा हो और दूसरे को कोई प्रकाशन मिले तब पहला भविष्यद्वक्ता चुप हो जाये और जो सभा है वह व्यवस्थित रहे क्योंकि परमेश्वर शांति के परमेश्वर है।

क्रेग कीनर लिखते हैं, "पुरातन भूमध्य शिष्टाचार के अनुसार एक प्रतिष्ठित महिला का अपने से असंबद्ध पुरुषों को सम्बोधित करना अनुचित माना जाता था... स्त्रियां औसतन पुरुषों से कम शिक्षित हुआ करती थी, इस अभिकथन के विषय पुरातन साहित्य के जानकरों को कोई संशय नहीं था... पौलुस स्त्रियों को अन्य पुरुषों से सभा में प्रश्न पूछने की मनाही के द्वारा सामाजिक अनौचित्य से बचते हैं, पर वह स्त्रियों के सीखने के विरोधी नहीं है.....अच्छी समझ के साथ वह शायद अधिक बुद्धिमत्तापूर्वक अपने आपको कलीसिया में प्रस्तुत कर सकती है, प्रार्थना और भविष्यवाणी अपने को इन बातों के प्रकाश में देने पर

वास्तविक विषय लिंग नहीं है पर औचित्य और शिक्षा है- जो आज कलीसिया में स्त्रियों की आवाज को सीमित नहीं करती" (10).

यदि पौलुस का अर्थ स्त्रियों का हमेशा मौन रहने से था तो तीन अध्याय पहले उसने उनको प्रार्थना और भविष्यवाणी करने के समय अपने सिर को ढांपने और का निर्देश नहीं दिया होता (1 कुरिन्थियों 11:5)

अधिकार और शिक्षा

प्र क्योंकि बाईबल कहती है कि स्त्रियों को पुरुषों को पढ़ाने अथवा अधिकार करने कि अनुमति नहीं है इसका अर्थ है कि स्त्रियों को शिक्षक अथवा पासबान होने की अनुमति नहीं है?

उ इफिसियों की पत्री में जिस वाक्य को स्त्रियों के अधिकार को सीमित करने के लिये लिया गया है वहीं वाक्य आज यह कहकर लागू किया जाना चाहिये कि प्रशिक्षिण बिना झूठी शिक्षाओं का मुकाबला नहीं किया जा सकता।

> मौन रह कर पूरी अधीनता में *शिक्षा ग्रहण करें।* मेरी ओर से स्त्री को पुरुष पर प्रभुता जताने और शिक्षा देने की आज्ञा नहीं है. वह मौन रहे। क्योंकि आदम की सृष्टि हव्वा से पहले हुई थी. छल आदम के साथ नहीं परन्तु स्त्री के साथ हुआ, जो पापी हूई. किन्तु स्त्रियाँ सन्तान उत्पन्न करने के द्वारा उद्धार प्राप्त करेंगी—यदि वे संयम के साथ विश्वास, प्रेम तथा पवित्रता में स्थिर रहती हैं. (1 तिमुथियुस 2:11-15)

यहाँ पर सिद्धाँत गलत शिक्षा को रोकने का है और यह तुरन्त 1 तिमुथियुस 1:3 में अभिव्यक्त किया गया है।

> मैंने मकदूनिया प्रदेश जाते समय तुमसे विनती की थी कि तुम इफ़ेसॉस नगर में ही रह जाओ और कुछ बताए हुए व्यक्तियों को चेतावनी दो कि वे न तो भरमानेवाली शिक्षा दें (1 तिमुथियुस 1:3)

पौलुस साथ में यह भी कहते है कि स्त्रियाँ झूठे शिक्षकों के निशाने पर थी

> इन्हीं में से कुछ वे हैं, जो घरों में घुस कर निर्बुद्धि स्त्रियों को अपने वश में कर लेते हैं, जो पापों में दबी तथा विभिन्न वासनाओं में फँसी हुई हैं (2 तिमुथियुस 3:6)

"एक स्त्री को सीखना चाहिये"

इस वचन का पहले चार शब्द नाट्कीय और उग्र है पर इन्हें हमशा छोड़ दिया जाता है। पौलुस कहते है स्त्रियों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। उनके अनुसार झूठी शिक्षा से लड़ने का सबसे अच्छा तरीका सही शिक्षा देना है: और एक स्त्री को रब्बियों की शिक्षा प्राप्त कर रहे बाकी अच्छे छात्रों की तरह शांत होकर शिक्षक का सम्मान करते हुए सीखना चाहिए।

"मैं एक स्त्री को शिक्षा देने की अनुमति नहीं देता"

पौलुस का अर्थ यह है कि स्त्रियों को आवश्यक शिक्षा प्राप्त करने से पहले शिक्षक बनने की अनुमति नहीं है, क्योंकि वह प्रिसिल्ला की शिक्षा देने की क्षमता की सराहना करते है (प्रेरितों 18:24-26 और रोमियों 16:3-5 ए) और ध्यान दीजिये कि वह अपने पति अक्विला के साथ इफेसुस में शिक्षा देती थी, उस कलीसिया में शिक्षक थी, जिसको यह खत मिला जिसमें यह गद्यांश दिया गया है।

“या फिर पुरुष के ऊपर अधिकार करने का”

रिबेका मेरील्ल ग्रोथियस कहती हैं, 12 वाक्य में, जो शब्द है जिसकी परिभाषा ‘अधिकार (औथेनटेन) वह शब्द नहीं है जिसका उपयोग अधिकार के सकारात्मक और न्यायोचित उपयोग के लिए हुआ हो (एक्सुसिया); लेकिन नये नियम में यह शब्द कहीं पर भी नहीं मिलता। पुरातन यूनानी भाषा ग्रीक में इसके कईं प्रयोग है जिसमें से अधिकतर केवल अधिकार से अधिक ताकतवर थे, और हिसंक प्रवृत्ति को इंगित करते थे।

पौलुस ने एक उग्र, आधिपत्य के स्वभाव का निषेध किया था, जो अमूमन किसी भी विश्वासी के लिए अनुचित था।

“वह शांत रहे”

स्त्रियों को शांत रहकर सीखना था और बीच में विघ्न नहीं पैदा करना था जैसे कि हरेक रब्बी के शिष्यों से अपेक्षित था।

“आदम को पहले बनाया गया है”

उत्पत्ति में, परमेश्वर ने “ज्ञान के अच्छे बुरे के वृक्ष से नहीं खाने के निर्देश आदम को सीधे दिये थे, हव्वा को परमेश्वर से यह निर्देश सीधे नहीं प्राप्त हुए। रिबेका मेरिल्ल ग्रोथियस बताती है कि उदाहरण देने का संदर्भ यह है कि धोखा और बड़ी गलती से बचने के लिए उसे वचन का कम ज्ञान है (जैसे हव्वा और इफेसुस की महिलायें) उन्हें उन के द्वारा शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए जो वचन का ज्ञान रखते है जैसे इफेसुस कलिसिया के पुरूष नेता” (12)

"बच्चे जनने से"

यह समझने में मुश्किल है लेकिन एक स्पष्टीकरण यह है कि आरतिमिस का मंदिर दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक था। यह विशालकाय था और इसके भण्डारगृह में 400 पहरेदार थे आरतिमिस को प्रजनन क्षमता की देवी के रूप में व्यापक रूप से पूजा जाता था और आरतिमिस की पूजा ऐसे देवी के रूप में की जाती थी जो बच्चे के जनने के समय सहायक हो। पौलुस यह कह रहे थे कि स्त्रियां बच्चों के जन्म के समय बचाई जायेगी; आरितिमिस के कारण नहीं पर उन्हें चाहिये कि यीशु पर विश्वास करें। मिमी हादद लिखते है "इफेसुस की झूठी शिक्षा का सामना करने के लिये पौलुस कहते है कि स्त्रियों को सन्तान उत्पन्न करने के द्वारा उद्धार प्राप्त होगा।" पौलुस का अर्थ यह है कि स्त्रियाँ सन्तान उत्पत्ती के दौरान उद्धार और छुटकारा पायेगी अरतिमिस की आराधना के द्वारा नहीं अपितु मसीह के विश्वास योग्य बनके? (13)

क्रेग कीनर एक बहुत ही महत्वूपर्ण बात बताते है किः "बाईबिल साधारण परिस्थितियों में स्त्रियों की सेवकाई की स्वीकृति देती है और केवल असाधारण/अपवादात्मक परिस्थतियों में उसकी मनाही की गई है। बाईबिल का एक गद्दाँश जहां पर स्पष्टतया स्त्रियों को बाईबिल पढ़ाने से वर्जित करता है उनको उन अनगिनत बाइबल गद्यांशों की तुलना में जहां परमेश्वर का वचन सुनाने वाली स्त्रियों को अनुमति दी गई है-उस कलीसिया को सम्बोधित है जहाँ पर झूठे शिक्षक प्रभावशाली रुप से स्त्रियों को निशाना बना रहे थे" (14)

संक्षेप में एकाकी परिस्थितियों के अलावा, बाईबिल की समग्र शिक्षा यह है कि परमेश्वर प्रदत्त वरदान स्त्रियों और पुरुषों दोनों ही को दिये गये है और सेवकाई के हर स्तर पर इन दोनों ही को भाग लेने के लिए प्रात्सोहित करना चाहिए। आधे संसार को बे़डियों में जकड़ कर हम उनसे परमेश्वर का हाथ और पैर होने की अपेक्षा नहीं रख सकते!

अधिष्ठाता

प्र क्या बाईबिल यह नहीं कहती कि पति परिवार का मुखिया होता है?

उ बाईबिल यह कभी नहीं कहती कि पति परिवार का मुखिया है। वह यह जरुर कहती है कि पुरुष स्त्री का सिर होता है और यह कि मसीह का सिर परमेश्वर होता है। पृष्ठभूमि के अनुसार "सिर" का अर्थ लोगों के मध्य और त्रिएकत्व में "जीवन का स्रोत" हो सकता है।

मैं चाहता हूँ कि तुम इस बात को समझ लो कि हर एक पुरुष के अधिष्ठाता (सिर) मसीह येशु हैं, स्त्री का सिर उसका पति है तथा मसीह के सिर परमेश्वर हैं (1 कुरंथियो 11:3)।

"सिर" और "केफाले" शब्द का अर्थ अक्सर अधिकार करना समझा जाता है, पर इसका अनुवाद "स्रोत," भी होता है, जैसे नदी का।प्रमुख दो कारण है जिनकी वजह से 1 कुरिन्थियों 11:3 में सिर का अर्थ "अधिकारपूर्ण नेता," के स्थान पर "जीवन का स्रोत," हो सकता है। पहले रिश्तों को उनके उद्भव के कालानुक्रमिक बताया गया है। गिलबर्ट बिलजिकियान यह बातते हैं कि जो क्रम इन तीन अनुच्छेदों को जोड़ता हैं वह कालक्रम है अनुक्रम नहीं। सृष्टि में मसीह आदम के जीवन के स्रोत होने के कारण मानव जीवन का स्रोत हुए।

और फिर पुरुष ने स्त्री को जीवन दिया क्योंकि वह उससे निकाली गयी थी।इसके पश्चात परमेश्वर ने पुत्र को अपने देहधारी होने पर जीवन दिया। यदि बाईबिल के क्रम से छेड़छाड़ न की जाये, तब यहाँ पर "सिर" का अर्थ जीवन का दाता है।" (15)

इस सोच को अपनाना अति उत्तम है। जैसा मिमि हादद लिखती है," उत्पत्ति में परमेश्वर स्त्री की सृष्टि आदमी के शरीर से करते है। उसी प्रकार मसीह कलीसिया का आरंभ अथवा स्रोत है। मसीह मरे कि दूसरों को जीवन मिले। इसी प्रकार पतियों को अपनी पत्नियों को त्यागपूर्वक- अपने शरीर के समान प्रेम करना है-यह एकता और घनिष्ठता को रेखांकित करता है। (16)

दूसरा, यदि यह कहे कि "सिर" का अर्थ "अधिकारिक नेता है" तब फिर यह निष्कर्ष निकलता है कि त्रिएक परमेश्वर के मध्य भी अधीनता है, जो कलीसिया के इतिहास में अपरंमपरागत और भ्रांत शिक्षा मानी गई है।

आइयें हम इस वचन को नजदीक से देखें जिसमें 'केफाले' को अधिकारिक नेता "माना गया है।

- हर पुरुष का आधिकारिक नेता मसीह है (हां)।
- स्त्री का आधिकारिक नेता एक पुरुष है (शायद)
- मसीह का आधिकारिक नेता परमेश्वर है (नहीं) यीशु पिता के अंनत रूप से अधीन नहीं है।

केविन गाइल्स विवरण करते हैं कि "वस्तुत: सारे ही मसीही यह मानते हैं कि पुत्र के देहधारण में उसने अपने को परमेश्वर के अधीन कर दिया था। उसने कार्यात्मक रुप से एक सेवक का रूप धारण किया। अधिकतर मसीह यह नहीं मानते कि देहधारण में

पुत्र की अधीनता त्रिएकत्व में पिता और पुत्र के संबंध की परिभाषा में अनंत और अंतरभूत रुप से है। फिलिप्पियों 2:5-11 में पौलुस निश्चित होकर कहते हैं पुत्र का अपने आप को स्वैच्छिक रूप से खाली करके एक मनुष्य बनने और क्रूस पर मरने से पहले वह परमेश्वर की समानता में थे और बाद में उन्हें प्रभु के रूप में राज्य करने के लिए महिमान्वित किया गया। (17)

जब 'केफाले' को 'जीवन के स्रोत' के रूप में परिभाषित किया जाता है तब इसका अर्थ अधिक सही लगता है।

- पुरुष का स्रोत मसीह है (हां)
- स्त्री का स्रोत पुरुष है (हां) सृष्टि में स्त्री को पुरुष ही के अंदर से बनाया गया था।
- मसीह का स्रोत परमेश्वर है (हां-यीशु को देहधारण में परमेश्वर पिता के द्वारा भेजा गया था)।

दूसरी कुछ ऐसी आयतों को लीजिये जो यीशु को कलीसिया के सिर के रूप में बताती हैं ध्यान दीजिए कि वह एक नेता या अधिकारी के रूप में यीशु की व्याख्या नहीं करती।

"सिर" यीशु को पहले स्रोत और उद्धार और विकास के दायक के रूप में वर्णित करता है।

> उन्होंने सब कुछ उनके अधीन कर दिया तथा कलीसिया के लिए सभी वस्तुओं का शिरोमणी ठहरा दिया—कलीसिया, जो उनका शरीर, उनकी परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ भरकर करते है। (इफिसियों 1: 22-23)

> परन्तु सच को प्रेमपूर्वक व्यक्त करते हुए हर एक पक्ष में हमारी उन्नति उनमें होती जाए, जो प्रधान हैं अर्थात् मसीह, जिनके द्वारा सारा शरीर जोड़ों द्वारा गठकर और एक साथ मिलकर प्रेम में विकसित होता जाता

है क्योंकि हर एक अंग अपना तय किया गया काम ठीक-ठाक करता जाता है (इफिसियों 4:15-16)।

यह व्यक्ति उस सिर को दृढ़तापूर्वक थामे नहीं रहता जिससे सारा शरीर जोड़ों और सांस लेनेवाले अंगों द्वारा पोषित तथा सम्बद्ध रहता और परमेश्वर द्वारा किए गए विकास से बढ़ता जाता है (कुलुस्सियों 2:19)।

बिलजिकियान व्याख्या करते है कि "नये नियम में जीवन के हर क्षेत्र के नेताओं के विषय अनगिनत वाक्य है: धार्मिक नेता, सामुदायिक नेता, सैनिक नेता, सरकारी नेता, पितृ सत्तामक नेता और कलीसिया के नेता। उन्हें कभी भी सिर अथवा "किसी के उपर सिर नहीं बताया गया है। इसका एकमात्र अर्थ यह है कि नये नियम की भाषा में सिर का अर्थ "नेता" नहीं था। "सिर" शब्द का उपयोग 1 कुरिन्थियों, इफिसियों और कुलुसियों के संदर्भ के अंतरगत यह पाया गया है कि अधिष्ठाता अथवा मुखिया नये नियम में मसीह के कार्यात्मक रुप को जिसमें वह जीवन के मुख्य और विकास के स्रोत और उनकी दाता और बनाये रखने वाले भूमिका की ओर इंगित करता है" (18)।

यदि आप अभी भी आश्वस्त नहीं हुए तब मैं आपको चुनौती देती हूं कि आप बर्कलि और अलविरा निक्लेसन का निबंध "नये नियम में केफाले का अर्थ क्या है?" पढ़े। एक नमूना यहाँ प्रस्तुत किया गया है: *"सबसे पूर्ण अंग्रेजी शब्दकोष (जिसमें होमेरिक,* क्लासिकल *और कोइने ग्रीक भी दी गई है) आज के तारीक में एक-दो खण्ड की* पुस्तक *है जिसमें 2000 पेज है जिनको लिडल स्कोट, जोनस और मेकन्जी द्वारा संग्रहित किया गया है और जिसको पहली बार 1843 में प्रकाशित भी किया गया... इस शब्दकोष में उदाहरण सहित केफाले का साधारण अर्थ दिया गया है अर्थ की सूची में 'अधिकार' "उच्च पद," 'नेता,"*

'निर्देशक या अर्थ में इससे मिलता –जुलता *कुछ भी नहीं है।* (19) *मिकेलसन्स* चौ*दह पत्रों में ग्रीक* के विषय बताते ही जाते *है।* इस निबंध के उत्तर में फिलिप बारटन पैईन कहते है, "वास्तव में मिकलसन्स ग्रीक भाषा का उपयोग कर अपने वाद को कमजोर करते है। *उसके 1968 के सप्लीमेन्ट को मिलाके लिडिल और स्कोट 'केफाले'* शब्द के *48 अलग-अलग* अंग्रेजी के समानार्थी *अर्थ* देते *हैं* उनमें से किसी का भी *अर्थ नेता, अधिकारी, प्रमुख और श्रेष्ठ* नहीं *है*। (20)

संक्षेप में कहा जायें तो यह विचार करना कि मनुष्य के पतन अथवा गिरने के परिणामस्वरूप पति अपनी पत्नी पर राज करे यह सोचने के स्थान पर परमेश्वर यह चाहते हैं कि पति अपनी पत्नी के जीवन के स्रोत और प्रोत्साहन के स्रोत बने, ठीक जैसे प्रभु यीशु हमारे है!

मेरिल्ल-ग्रोथियस की व्याख्या यह हैं, "विड़बना यह है कि पत्नी के सिर को पत्नी का नेता समझना बाईबिल के इस उद्देश्य को कि 'सिर अपनी पत्नी के जीवन, स्वास्थ्य और विकास का स्रोत है' को पराजित करता है। एक स्त्री अपनी पूर्ण आत्मिक, भावानात्मक और बौद्धिक परिपक्वता तब तक नहीं पाती जब तक उसे जिम्मेदारी लेने के अवसरों से वंचित किया जाता रहें और उसके साथ एक ऐसे बच्चे की तरह बर्ताव किया जाये जिसके अपने निर्णय दूसरे लेते हैं।

हाइरार्की अथवा पुरुष प्रधानता वाले परिवार में पति के चरित्र और पवित्रीकरण के विकास की भी वृद्धि नहीं हो पाती, जिससे दो सहायकों और साझेदारों को सीखने और सिखाने का एक समान मौका, जो मसीह के राज्य की सेवा में है वह छूट जाता है" (21)।

अधीनता

प्र बाईबल कहती है कि पत्नियों को अपने पति के अधीन रहना है। क्या यह तब ठीक नहीं होता जब यह स्वेच्छा से और बुद्धिपूर्ण सहायता हो?

उ पत्नियों का आधीन रहना और दासों का आज्ञाकारी होना पहली शताब्दी में अपेक्षित था। पर पौलुस मसीही घरानों को निर्देश देते हैं कि एक नये रीति से व्यवहार करें। एक दूसरे को समर्पित रहे।

मसीह में आदर के कारण *एक दूसरे के आधीन रहो.* पत्नी अपने पति के अधीन उसी प्रकार रहे, जैसे प्रभु का ...पति अपनी पत्नी से उसी प्रकार प्रेम करे जिस प्रकार मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और स्वयं को उसके लिए बलिदान कर दिया...।जो दास हैं, अपने सांसारिक स्वामियों का आज्ञापालन सच्चाई से व एकचित होकर ऐसे करें मानो मसीह का....जो स्वामी हैं, वे भी दासों के साथ ऐसा ही व्यवहार करें और उन्हें डराना-धमकाना छोड़ दें, यह ध्यान रखते हुए कि तुम्हारे व दासों दोनों ही के स्वामी स्वर्ग में हैं, जिनके स्वभाव में किसी भी प्रकार का भेद-भाव नहीं है. (इफिसियों 5:21-22, 25; 6: 5,9)

एक दूसरे के अधीन रहना यहां पर मुख्य वचन है, जो यह बताता है कि हम पवित्र आत्मा की भरपूरी को अपने घरों में कैसे प्रदर्शित कर सकते हैं। पौलुस उस संस्कृति में एक दूसरे के अधीन रहने के उदाहरण के लिए पत्नियों का अपने पति के प्रति अधीनता में रहने का उपयोग कर रहा था। पत्नियों और दासों की आज्ञाकारिता यहूदी और रोमी न्याय व्यवस्था के अनुसार एक अपेक्षित सांस्कृतिक आदर्श था। पर प्रथम कलीसिया की प्राथमिकता सुसमाचार फैलाना था, व्यवस्था को भंग करना नहीं। इसलिए पौलुस यह व्याख्या कर रहे है कि एक पैतृकवादी समाज की सीमा में रहकर किस प्रकार से मसीही धर्माचरण-अधीनता (आज्ञापालन करने से नहीं) और प्रेम (नियम से नहीं) से रहा जा सकता है।

जे ली ग्रेडी यह सारांश निकालते हैं, "अधीनता, जो एक दूसरे पर आधिपत्य और शासन के लिए नहीं परन्तु एक-दूसरे को वरीयता देने के अर्थ में और व्यक्तिगत अधिकार की मांग न करने के अर्थ में मसीह के पूरे शरीर में परिचालित होनी चाहिए कि मसीह का प्रेम संसार पर प्रकट हो" (22)

उपसंहार

स्त्रियों और पुरुषों को अनेक बार एक स्वस्थ संबंध रखने और प्रभावशाली सेवकाई करने से बाईबिल के कुछ वचनों की एक प्रकार की व्याख्या बाधा बनी है। यह पहला मौका नहीं है जब ऐसा हुआ है।अमरीका में 1800 में दासत्व के समर्थक उनके बाइबल की व्याख्या पर बहुत अधिक आश्रित थे। उन्होंने देखा कि यीशु ने दृष्टांतों में दासों का संदर्भ दिया, और गलातियों की पत्री 6 अध्याय में दासत्व के उदाहरण और इफिसियों में दासों को अपने स्वामी के अधीन रहने के लिए कहा गया है। स्टान गंड्री कहते हैं "किसी दिन कलीसिया पुरुष प्रधानता के अनुक्रम का बाईबिल से प्रतिरक्षा करने के लिए उतनी ही शर्मिंदा होगी जितनी वह उन्नीसवी सदी के दासत्व की बाईबिल से प्रतिरक्षा करने से आज है" (23)

वचन को संदर्भ, समय और पूरे प्रसंग के अनुसार परिभाषित करना चाहिए। यह ध्यान दीजिए कि परिस्थिति बाईबिल के पूरे संदेश के आधार पर है।

- एक प्रेरणा प्राप्त स्त्री, जो बाईबिल की शिक्षा ग्रहण कर रही है उसे कहा जाता है कि वह कलीसिया में अपनी संक्षिप्त गवाही एक विशेष स्थान पर खड़े होकर दे और ऐसा कुछ भी न कहे, जो शिक्षा देना माना जाये।

- एक बच्चे को ऐसे सही इलाज से महरूम रखा जाता है, जो उसकी मां ने काफी खोजकर और पूछकर करना चाहा सिर्फ इसलिये कि उसका पति उससे असहमत है और मना करता है।
- एक ऐसी स्त्री को, जो एक बढ़ती हुई सेवकाई में बहुत कुछ कार्य कर रही है उसे इस कारण से निकाल दिया जाता है कि कलीसिया समिति में ऐसे पुरुषों ने प्रवेश किया है, जो यह मानते हैं कि स्त्रियों को नेतृत्व के पद पर नहीं होना चाहिए।
- एक पत्नी का उसके पति द्वारा, जो डीकन भी है, शारिरिक और मानसिक उत्पीड़न होता है। उनके पास्तर उन्हें सलाह देते हैं कि वह पति को गुस्सा न दिलाये और उसके आधीन रहे।
- कॉलेज में एक प्रतिभाशाली स्त्री को आगे सफल करियर बनाने के स्थान पर यह कह दिया जाता है कि उनके लिये परमेश्वर की योजना है कि वह शादी कर ले। उस से यह कहा जाता है कि बाहर नौकरी करने की वजह से वह अपने पति की सेवा ठीक ढ़ंग से नहीं कर पायेगी।

स्वीकार करना होगा कि इस विषय पर भिन्न-भिन्न अभिप्राय है लेकिन यदि हम गलती कर रहे हैं तो परमेश्वर के काम को रोकने की न करे। आईयें हम मसीह के शरीर रुपी पूरी कलीसिया को प्रोत्साहित करें कि वह अपने परमेश्वर प्रदत्त वरदानों को सारी दुनिया के लिए उपयोग करें। आवश्यकताएं बहुत हैं और परमेश्वर जानते है की सभी की आवश्यकता है। पितृ-सत्तात्मकता (पुरुष प्रधानता) बाईबिल का उदाहरण नहीं अपितु पाप का परिणाम है।

क्रिस्च्यन्स फोर बिब्लिकल ईक्वालिटी (सी बी ई) के बारे में

क्रिस्च्यन्स फोर बिब्लिकल इक्वालिटी एक गैर-लाभ संस्था है, जो गलातियों 3:28 पर आधारित शिक्षा पर यह विश्वास करती है कि बाईबिल की जब सही तरह से व्याख्या की जाती है तब वह सारे संस्कृति, सारे समूहों और सारे आर्थिक वर्गों और सारे उम्र की स्त्रियों और पुरुषों की आधारभूत समानता की शिक्षा देती है।

> *इसलिए अब न कोई यहूदी है, न कोई यूनानी; न कोई स्वतन्त्र है, न कोई दास और न कोई पुरुष है, न कोई स्त्री क्योंकि तुम सब मसीह येशु में एक हो.*

मिशन स्टेटमेंट

संस्था का लक्ष्य यह है कि बाईबिल के न्याय और सामूहिक चिन्तन को बढ़ायें और मसीहों को इस बात की शिक्षा दें कि बाइबल स्त्रियों और पुरुषों को इसलिए बुलाती है कि वह अपने घर पर, कलीसिया और संसार में अपना अधिकार और सेवकाई परस्पर बांटे।

महत्वपूर्ण मूल्य

- वचन हमारे विश्वास, जीवन और प्रवृत्ति की अधिकारिक निर्देशिका है।
- पितृ सत्तातमकता (पुरुष प्रधानता) बाईबिल का मूल्य नहीं अपितु पाप का परिणाम है

- पितृ सत्तातमकता (पुरुष प्रधानता) अधिकार का गलत उपयोग है क्योंकि यह स्त्रियों से वह सब छीन लेता है, जो परमेश्वर ने उन्हें दिया हैः उनकी आजादी, उनका नेतृत्व उनका आत्मसम्मान और अधिकतर उनका जीवन भी।
- बाईबिल में पैतृकी संस्कृति की प्रतिच्छाया है किन्तु बाईबिल मनुष्य के संबंधों में पुरुष प्रधानता नहीं सिखाती है।
- मसीह का छुटकारे का कार्य सब स्त्री और पुरुषों को पितृ-सत्तात्मक प्रथा से मुक्त करता है साथ ही स्त्री और पुरुषों का अधिकार के साझेदारी से नेतृत्व और सेवकाई करने हेतु आह्वान करता है।
- रिश्तों के लिए परमेश्वर की रुपरेखा (उद्देश्य) में पुरुष और स्त्री के बीच विश्वासपूर्ण विवाह और अविवाहित अकेले रहना और एक मसीही समाज में परस्पर आधीनता है।
- स्त्रियों के परमेश्वर प्रदत्त वरदानों का उपयोग पवित्र आत्मा के कार्य का अभिन्न अंग है और दुनिया में सुसमाचार प्रचार के लिए अति आवश्यक है।
- यीशु मसीह के शिष्यों को अन्याय का विरोध करना है और पितृ सत्ता की शिक्षा का भी और ऐसे सभी व्यवहारों का, जो स्त्रियों को पुरुषों का निम्नीकरण और शोषण उत्पीड़न का कारण बनें।

भविष्य का दर्शन

सी.बी.ई. संस्था एक ऐसा भविष्य का दर्शन देखती है जहां सब विश्वासी अपने परमेश्वर-प्रदत्त वरदानों का उपयोग, अपने समूह के पूरी-पूरी सहायता के साथ परमेश्वर की महिमा और उद्धेश्य की पूर्ति के लिए करते हैं।

अंतिम नोट्स

(1) Linda Belleville, *Two Views on Women in Ministry* (Zondervan Publishing House, 2001; Grand Rapids, MI; James Beck and Craig Blomberg, eds.). 142.

(2) Ibid., 148.

(3) Rebecca Merrill Groothuis, *Good News for Women* (Baker Book House, 1997; Grand Rapids, MI). 43.

(4) Gilbert Bilezikian, *Beyond Sex Roles* (Baker Academic, 2006; Grand Rapids, MI). 99-100.

(5) John Phelan, *All God's People* (Covenant Publications, 2005; Chicago, IL). 51.

(6) Mimi Haddad, "What Language Shall We Use?" (*Priscilla Papers*, Volume 17, Issue 1, Christians for Biblical Equality; Minneapolis, MN).

(7) Richard and Catherine Kroeger, "Why Were There No Women Apostles?" (*Equity*, 1982). 10-12.

(8) David Claydon, "The Context for the Production of the Lausanne Occasional Papers," (*Empowering Women and Men to Use their Gifts Together in Advancing the Gospel, Lausanne Occasional Paper No. 53*; Christians for Biblical Equality, 2005; Minneapolis, MN; Alvera Mickelsen, ed.). iv.

(9) Bilezikian, *Beyond Sex Roles*, 140.

(10) Craig Keener, *Two Views on Women in Ministry* (Zondervan Publishing House, 2001; Grand Rapids, MI; James Beck and Craig Blomberg, eds.). 166, 169, 171.

(11) Groothuis, *Good News for Women*, 215.

(12) Ibid., 222.

(13) Mimi Haddad, "Paul and Women," (*Empowering Women and Men to Use their Gifts Together in Advancing the Gospel, Lausanne Occasional Paper No. 53*; Christians for Biblical Equality, 2005; Minneapolis, MN; Alvera Mickelsen, ed.). 34.

(14) Keener, *Two Views on Women in Ministry*, 29.

(15) Gilbert Bilezikian, "I Believe in Male Headship" (Christians for Biblical Equality, Free Articles, cbeinternational.org; Minneapolis, MN).

(16) Haddad, "Paul and Women," 35.

(17) Kevin Giles, "The Subordination of Christ and the Subordination of Women," (*Discovering Biblical Equality*; InterVarsity Press, 2004; Downers Grove, IL; Ronald Pierce and Rebecca Merrill Groothuis, eds.). 337.

(18) Bilezikian, *Beyond Sex Roles*, 122.

(19) Berkeley and Alvera Mickelsen, "What Does Kephale Mean in the New Testament?" (*Women, Authority & the Bible*; InterVarsity Press, 1986; Downers Grove, IL; Alvera Mickelsen, ed.). 97-98.

(20) Phillip Barton Payne, "Response," (*Women, Authority & the Bible*; InterVarsity Press, 1986; Downers Grove, IL; Alvera Mickelsen, ed.). 118.

(21) Groothuis, *Good News for Women*, 157-158.

(22) J. Lee Grady, *Ten Lies the Church Tells Women* (Charisma House, 2000; Lake Mary, FL). 177.

(23) Stan Gundry, "From Bobbed Hair, Bossy Wives, and Women Preachers to Woman Be Free: My Story" (Priscilla Papers, Volume 19, Issue 2, Christians for Biblical Equality; Minneapolis, MN).

(24) *The Holy Bible, Today's New International Version* (Zondervan, 2006; Grand Rapids, MI). xi.

"स्टिल साईड बाय साईड संसार में कलीसिया की सेवकाई को कमजोर करने वाली भ्राँति, बाईबल के उथले वाचन और लिंग पुर्वाग्रह का एक ताकतवर और संक्षिप्त उपाय है। व्यक्तिगत और समूह में अध्य्यन करने के लिये एक उन्नत पुस्तक, स्टिल साईड बाई साईड लिंग के विषय उठे उन प्रश्नों के उत्तर देने में एक सहायक साधन है जिन्हें आज की कई कलीसियाँ को संबोधित करना चाहिये"

मिमि हादद

अध्यक्ष क्रिस्टयन्स फोर बिब्लिकल इक्वालिटी
www.cbeinternational.org

"स्टिल साईड बाई साईड बाईबिल में निहित समानता का एक उत्तम संक्षिप्त वृत्तांत है।"

ऐलवीरा मिकल्सन

क्रिस्टियन्स फोर बिब्लिकल इक्वालिटी की संस्थापक सदस्य,
लेखक, संपादक और शिक्षिका है।

जेनेट जोर्ज ने क्रिस्टियन फोर बिब्लिकल इक्वालिटी के निदेशकों के बोर्ड में कार्य किया है और वह एनलाईटन फाउन्डेशन नामक संस्था की आत्मिक निदेशक भी रह चुकी है। वह और उनके पति मेट सेन्टिनियल कोलराड़ो में स्थित एक रेसीडेन्शियल अप्रेसल कंपनी (जमीन जायदाद्र का मुल्यांकन करने वाली) के मालिक है और वहीं पर स्थित ओएसिस नामक कलीसिया के सदस्य भी है। उनकी तीन वयस्क पुत्रियाँ है।

स्टिल साइड बाई साईड: बाईबिल में निहित समानता की एक संक्षिप्त
व्याख्या की अतिरिक्त प्रति इस वेबसाईट पर आर्डर करें।:
वेब: www.equalitydepot.com
फोन: 612-872-6898
ई मेल: books@cbeinternational.org

Other countries may find order information from Info@publish4all.com

CBE International

9 781939 971319 90000